का अच्छा नियंत्रण और अधिक उपज मिलती है ।

प्याज की खुदाई:

जब 50 प्रतिशत पौधों की पत्तियाँ पीली पड़कर मुरझाने लगे तब कंदों की खुदाई शुरू कर देनी चाहिए । इसके पहले या बाद में कंदों की खुदाई करने से कंदों के भण्डारण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है ।

उपज:

रबी : 250–300 क्विंटल / हेक्टेयर (अप्रैल से मई)

खरीफ : 150–200 क्विंटल / हेक्टेयर (जनवरी से फरवरी)

भंडारण:

प्याज के कंदों को 0–4.5°C तापमान पर भंडारित करना चाहिए । मैलिक हाईड्राजाइड 2000–2500 पीपीएम का छिड़काव भंडारण से पूर्व कर देने पर भंडारण के दौरान सड़न व गलन को कम किया जा सकता है ।

कीट एवं व्याधि नियंत्रण:

थ्रिप्स: यह कीट कई विषाणु जनित बीमारियों का वाहक भी होता है । ये कीट छोटे आकार के होते हैं, जो पत्तियों का रस चूस लेते हैं और पत्तियाँ कमजोर हो जाती हैं । आक्रमण के स्थान पर सफेद चकते पड़ जाते हैं । इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस एल (0.3–0.5 मि.ली. / लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार 15 दिनों पर दुबारा प्रयोग किया जाना चाहिए ।

जीवाणु धब्बा: वर्षा ऋतु के मौसम में पौध पर जीवाणु धब्बा बीमारी बहुत लगती है । पत्तियों पर काले धब्बे बन जाते हैं । इस अवस्था में स्ट्रेप्टोसाइक्लीन दवा का 250 पीपीएम घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए ।

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें।

कृषि विज्ञान केन्द्र, जमुई

(बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, बिहार)

संपर्क:–8292847891

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,

पटना (बिहार)

संपर्क:–9430602962

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

भाकृअनुप
ICAR

प्याज में खरपतवार नियंत्रण

कुमारी रश्मि रानी

विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान), कृषि विज्ञान केन्द्र, जमुई

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

प्याज में खरपतवार नियंत्रण

परिचय:

प्याज एक महत्वपूर्ण सब्जी एवं मसाला फसल है । इसमें बहुत से औषधीय गुण पाये जाते हैं । प्याज का सूप, अचार एवं सलाद के रूप में उपयोग किया जाता है । प्याज में कार्बोहाइड्रेट के साथ–साथ कई प्रकार के तत्व जैसे सल्फर, कैल्शियम, प्रोटीन व विटामीन सी आदि काफी मात्रा में पाए जाते हैं । गर्मी में लू लग जाने तथा गुर्दे की बीमारी में भी प्याज लाभदायक रहता है ।

भारत दुनियां में प्याज का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है । हमारे देश में प्याज की खेती मुख्य रूप से रबी फसल के रूप में की जाती है ।

जलवायु:

यद्यपि प्याज ठण्डे मौसम की फसल है, परन्तु अनेक राज्यों में प्याज की खेती खरीफ में भी की जाती है । प्याज फसल के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्कता होती है । अच्छे कन्द बनने के लिए बड़े दिन तथा कुछ अधिक तापमान होना अच्छा रहता है । कन्द बनने से पहले 12–21°c तापमान उपयुक्त रहता है । प्याज के बीज उगने के लिए 20–25° तापमान उपयुक्त रहता है ।

प्याज की खेती के लिए भूमि:

उपजाऊ दोमट मिट्टी जिसमें जीवांश खाद प्रचुर मात्रा में हो व जल निकास की उत्तम व्यवस्था हो, सर्वोत्तम रहती है । भूमि अधिक क्षारीय व अधिक अम्लीय नहीं होनी चाहिए । अन्यथा कन्दों की वृद्धि अच्छी नहीं हो पाती है । अगर भूमि में गंधक की कमी हो तो 40 किलो जिप्सम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की अन्तिम जुताई के समय कम–से–कम 15 दिन पूर्व व्यवहार अवश्य कर लें ।

उन्नत किस्में:

रबी मौसम : एग्रीफाउण्ड लाईट रेड, अर्का निकेतन, एन 2–4–1, पूसा रेड, नासिक रेड, पूना रेड, भीमाराज

खरीफ मौसम: एन–53, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, अर्का कल्याण, वसंत –780, भीमा सुपर ।

भीमा डार्क रेड

भीमा रेड

भीमा सफेद

बीज बोने का समय:

रबी फसल के नर्सरी में बीज की बुवाई अक्टूबर से मध्य नवंबर तक करना अच्छा रहता है । खरीफ प्याज उत्पादन के लिए बीज की बुवाई 15 जून से 30 जून तक करनी चाहिए ।

बीज की मात्रा: 8–10 किलोग्राम/हे0

लगाने की दूरी: 15×10 सें.मी.

खाद व उर्वरक :

रबी प्याज में खाद व उर्वरक की मात्रा जलवायु व मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करती है । अच्छी फसल लेने के लिए 30–35 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेती की अन्तिम जुताई के समय प्रयोग करनी चाहिए । इसके अलावा 80 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फॉस्फोरस व 80 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डालें । नत्रजन की आधी मात्रा और फॉस्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा रोपाई के पहले ही खेत में मिला दें । नत्रजन की शेष मात्रा को दो बराबर भागों में बाँटकर रोपाई के 30 दिन तथा 45 दिन बाद छिड़काव कर दें । इसके अतिरिक्त 50 किलोग्राम सल्फर व 5 किलोग्राम जिंक प्रति हेक्टेयर की दर से रोपाई के पूर्व डालना भी उपयुक्त रहेगा ।

सिंचाई:

रबी मौसम में सिंचाई प्रति सप्ताह तथा बरसात के मौसम में वर्षा नहीं हो पर 8–10 दिनों पर सिंचाई करें ।

खरतपवार नियंत्रण:

खेत को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए निकाई–गुड़ाई करें । खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडिमेथालीन @ 100 ml/15 पानी के साथ या ऑक्सिफ्लोरफेन 23.5% EC 15 मि.ली./15 लीटर पानी के साथ रोपाई के 3 दिनों बाद छिड़काव करने पर इसका अच्छा प्रभाव होता है । इसके साथ ही खरीफ के फसल में 25–30 दिन बाद हाथ से एक–दो बार निराई करें । रबी फसल में रोपण के 40–50 दिन बाद हाथ से एक बार निराई करें । खरपतवार की अधिक समस्या होने पर खरपतवारनाशी गोल (1.5–2 मि.ली.) अथवा टरगासुपर (2.5–3.5 मि.ली.) प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर छिड़काव रोपाई पूर्व करें । रबी मौसम में चावल का भूरा घास या गेहूँ पुआल का उपयोग मल्चिंग के रूप में करने से खरपतवार नियंत्रण के साथ उपज में भी वृद्धि होती है । ऑक्सिफ्लोरफेन 23.5% EC 1 मिली लीटर/लीटर पानी + क्विजलॉफॉप एथाइल 5% EC @ 2 मिलीलीटर/लीटर पानी का संयुक्त छिड़काव रोपाई के बाद 20–25 दिन में और 30–35 दिन में करने पर खरपतवार